भगवत् कृपा

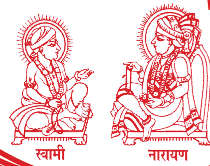

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ।। शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 41 अंक : 4 | 24.7.2018 मंगलवार (जुलाई - अगस्त) | वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00

गुरुपूर्णिमा व रक्षाबंधन के परम पावन अवसर पर प्रगट प्रभु को शत्-शत् नमन...

जगत में गुरु के कई रूप होते हैं। कभी पिता, कभी भाई, तो कभी मित्र-सखा... जो शिष्य के समर्पण की पुष्टि करते हैं। इस परिभाषा में जो व्यक्ति हमें कुछ नया सिखाता है या हमारा मार्गदर्शन करता है, वही हमारा गुरु है। वो गुरु किसी भी रूप में हों, हमें उनका ज़रूर आदर-सम्मान करना चाहिए। **गुरु के बिना किसी के भी महान बनने की कल्पना नहीं की जा सकती है।**

जब तक मनुष्य को अपने जीवन में स्वच्छता, शुद्धि, शांति, पवित्रता बनाए रखने की-सच्चा ज्ञान प्राप्त करने की अंतर में अभीप्सा रहेगी, तब तक गुरु-शिष्य का यह संबंध रहेगा और... यह संबंध शाश्वत् रखने में ही भारत एवं विश्व का कल्याण निहित है। जीव पर लगे धब्बे साफ़ करने के लिए पहले तो गुरु अपने शिष्यों के सभी प्रकार के दोष को माफ़ कर देते हैं, फिर जैसे एक शिल्पी मूर्ति घढ़ने के लिए पत्थर को छैनी व हथौड़ी से ठोकता है, उसी प्रकार गुरु शिष्य को कदम-कदम पर टोक कर, सही-गलत की पहचान करवा कर, समय-समय पर आगाह करके उसके चरित्र की घड़ाई भी करते हैं।

गुणातीत स्वरूपों की अक्षुण्ण परंपरा द्वारा ऐसे गुरु आज भी हमारी परवरिश कर रहे हैं।

पर, प.पू. काकाजी महाराज के शब्दों में–

* *इस साधु के संबंध से तो बिना साधना करे देहभाव टल जाता है; पर कोई संबंध करता नहीं है।*

* *धर्म, ज्ञान और वैराग्य युक्त कोई हो, पर भगवान में या उनके एकनिष्ठ भक्त से न जुड़ा हुआ हो, तो उसे एक खंभे से दूसरे खंभे पर भटकती रही मकड़ी जैसा समझना।*

भगवान व ऐसे संत को (गुरु को) आगे रख कर काम करना। उसके बिना तो 'ब्रह्मज्ञान' भी अभद्र है।

और... शिष्य यदि अपनी स्व की अस्मिता को तिलांजलि देकर, बिलकुल शून्य बन कर गुरु के कहे एक-एक शब्द व वचन का अनुसरण करे, तो जन्मों से जकड़े हठ, मान, ईर्ष्या, आशा, तृष्णा, मद्-मत्सर से सहजता से मुक्त हो

जाए। उसकी पंचभूत की देह 'भागवती तनु' में परिवर्तित हो जाए। दरअसल, गुरु तो भक्त और भगवान के बीच सेतु है। संत के रूप में गुरु ही शिष्यों-मुमुक्षुओं के जीवन में बसंत लाते हैं। जैसे शारीरिक रोगों के निवारण हेतु उपयोगी औषधियों का ज्ञान चिकित्सक से होता है, वैसे गुरु हमारे जीव, इंद्रियों व अंतःकरण को सर्व प्रकार से निरोगी बनाने हेतु आत्मा के सच्चे धन्वंतरी वैद्य बनते हैं।

भारतीय संस्कृति को जगद्गुरु के स्थान पर स्थापित करने में जिनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है, ऐसे सनातन धर्म के प्रवर्तक वेद, पुराण, शास्त्रों के रचयिता महान ऋषि **व्यासजी का प्राकट्य दिन** गुरुपूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है। दरअसल, गुरुपूर्णिमा गुरु द्वारा की गई कृपा-उपकार का ऋण अदा करने का, गुरुदक्षिणा देने का दिन है।

सो, **'गुरुपूर्णिमा' –**

गुरु-शिष्य के स्नेह का पावन पर्व है।

गुरु के प्रति श्रद्धा और समर्पण का पर्व है।

गुरु के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का दिन है।

क्योंकि –

गुरु का आशीर्वाद ही कल्याणकारी-ज्ञानदायी होता है।

वे ही हमारी अंतःकरणरूपी भूमि में प्रभुनाम के बीज बोते हैं।

त्रिगुणात्मिका माया की भ्रांति के भ्रम को भगा कर, मानव स्वरूप में ब्रह्मत्व के प्राकट्य की अनुभूति कराते हैं।

अपनी निर्मल परावाणी से हमारे भीतर का अंधकार टाल कर, जीवन निर्भय व निश्चिंत कर देते हैं।

यूँ, सच्चे गुरु का महत्त्व हर प्रकार से सकारात्मक है। उन्हें कभी भी अपना नाम, शौर्य, यश या कीर्ति की कामना नहीं होती। **शिष्य को अध्यात्म की श्रेष्ठ कक्षा पर पहुँचाना ही अध्यात्म गुरु का एकमात्र उद्यम-लक्ष्य होता है।**

इसी प्रकार, **'रक्षाबंधन' –**

पौराणिक एवं ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार **'रक्षाबंधन'** के कई रूप नज़र आते हैं। जैसे युद्ध के समय या व्यापार के लिए समुद्र यात्रा पर जाने से पूर्व पत्नियाँ, परिवार के अन्य सदस्य अथवा ब्राह्मण इत्यादि रक्षा सूत्र बाँध कर पुरुष के सुरक्षित लौटने की कामना करते थे।

विदित है कि देवों और असुरों के मध्य भयंकर युद्ध छिड़ने पर, रण भूमि पर जाने से पूर्व इंद्र की पत्नी शचि ने अपने पति की कलाई पर रक्षा सूत्र बाँधा था।

पुरातन समय में श्रावण मास में ऋषिगण आश्रम में रह कर अध्ययन एवं यज्ञ करते थे और श्रावणी पूर्णिमा को यज्ञ की पूर्णाहुति होती थी। यज्ञ की समाप्ति पर भी यजमानों और शिष्यों को रक्षा-सूत्र बाँधने की प्रथा थी। इसलिए इसका नाम 'रक्षाबंधन' प्रचलित हुआ। उसी परंपरा का निर्वाह करते हुए ब्राह्मण आज भी अपने यजमानों को रक्षासूत्र बाँधते हैं। इसी रक्षासूत्र को **'राखी'** भी कहा जाने लगा।

सिकंदर एवं राजा पोरस के बीच हुए युद्ध से पूर्व रक्षाबंधन के पर्व पर सिकंदर की प्रेमिका ने पोरस की कलाई पर राखी बाँध कर अपने प्रेमी के प्राण की रक्षा का वचन लिया था। यही कारण था कि बार-बार सिकंदर का वध करने का अवसर मिलने पर भी पोरस ने उसका वध नहीं किया और राखी के वचन का पालन किया। ऐसे ही जब गुजरात के बहादुर शाह ने मेवाड़ पर आक्रमण किया, तो चित्तौड़ की महारानी कर्णावती ने मुग़ल शासक हुमायूँ को

राखी भेज कर सहायता की माँग की थी... रेशम के इस पवित्र धागे में कितनी शक्ति कही जाए कि एक **मुस्लिम शासक** ने राखी का सम्मान किया ! यूं रक्षाबंधन बहन-भाई के पवित्र प्रेम के संबंध को अत्यधिक मधुर व प्रगाढ़ बनाने का तो स्रोत है।

अध्यात्म में गुरु-शिष्य की परंपरा के प्रतीक त्यौहार भी हैं। यह **रक्षासूत्र जीव को एहसास कराता है कि प्रभु हर पल मेरे साथ हैं और मेरा कभी अनिष्ट नहीं होने देंगे।**

हम सभी के पूर्व के बहुत ही बलिष्ठ संस्कार हैं कि हमें इस कलियुग में शुद्ध गुरुपरंपरा के प्रगट प्रभु का सहज जोग हुआ। अपनी गोद में बिठा कर-शरण देकर, वे हमारी हर प्रकार से जिम्मेदारी लेकर प्रति पल के रक्षक बने हैं। हमें ऐसे परम सत्य स्वरूप के साथ अपना जीव जोड़ कर अपना ये जन्म सार्थक बनाना है।

आइए, जिन दिव्य विभूतियों के आगमन से हमारा समाज **सदा सनाथ** रहा, उनके आशिष प्राप्त करके **27 जुलाई – गुरुपूर्णिमा** एवं **26 अगस्त – रक्षाबंधन** के पवित्र दिनों पर गद्‌गद्‌ हृदय से प्रार्थना करें और गुणातीत स्वरूपों द्वारा हमारे लिए किए गए परिश्रम, उनके द्वारा समय-समय पर दी गई अध्यात्म सूझ का मोल व गहराई समझ कर, उस पर अमल करके प्रगट प्रभु की प्रसन्नता के पात्र बनें...

गुरुहरि योगीजी महाराज की कृपावर्षा...

⁕ **वचनामृत के कथाप्रसंग के समय गुरुवर्य योगीजी महाराज से एक हरिभक्त ने प्रश्न पूछा** – *आत्मा का दर्शन और अनुभव कैसे हो सकता है ?*

हँसते हुए गुरुहरि योगीजी महाराज ने कहा – *आत्मा दिखाई देती है, लेकिन मानी नहीं जाती। परंतु,* ***'बड़े पुरुष'*** *के समागम में रहते हुए, वे जैसा कहें वैसा करने की लगन लगा दें तो जीव में प्रतीति हो जाएगी। शोला देखने की यह बात नहीं है, बल्कि ज्ञान से समझने की बात है। वचनामृत गढडा प्रथम 20 और वड़ताल 11 में महाराज ने स्पष्ट रूप से कहा है कि जिसे सत्संग मिला है, अर्थात् – जिसे* ***'सच्चे पुरुष'*** *मिले हैं, वह यदि परिश्रम करे, तो उसे अपना स्वरूप ब्रह्म और उसमें अखंड रहे पुरुषोत्तमनारायण के स्वरूप का अनुभवज्ञान हो जाए; परंतु, उसके लिए लग जाना पड़े। फिलहाल तो हर प्रकार से सब कुछ सानुकूल है। तो, व्यवहार गौण करके उत्तम कोटि का सर्वोपरि ज्ञान सिद्ध कर लेना चाहिए...*

⁕ **गुरुवर्य योगीजी महाराज ने एक अन्य रहस्यमय बात की** – *महाराज ने सिद्धदशा प्राप्त किए स्वरूपानंदस्वामी को पर्वतभाई जैसे गृहस्थ का समागम करने के लिए भेजा। एक बार तो वे लौट आए, फिर भी महाराज ने उन्हें पुनः भेजा और पर्वतभाई जैसे गृहस्थ को दंडवत् करवाया ! और... वाक़ई जब स्वरूपानंदस्वामी ने पर्वतभाई का उपदेश सुना तब महाराज के प्राकट्य की सर्वोपरिता का परात्परभाव समझ में आया।*

पू. अर्जुनकाका ने प्रश्न किया – *स्वरूपानंदस्वामी को तो भगवान की मूर्ति अखंड दिखती थी - मूर्तिसिद्ध थे, फिर भी ऐसी कौन-सी कसर रह गई ?*

गुरुवर्य योगीजी महाराज ने प्रत्युत्तर दिया – *उन्हें (स्वरूपानंदस्वामी को) ऐसी ग़लतफ़हमी हो गई कि अंतर में मुझे पाघ और ज़री वाली पोशाक धारण किए महाराज के साक्षात् जो दर्शन होते हैं, उससे अब मेरी पूर्णाहुति हो गई है। लेकिन, प्रगट विचरते स्वरूप के संबंध की महिमा समझना शेष रह गया। और... उस*

महिमा की तो कोई अवधि नहीं है। यह बात समझाने के लिए दादाखाचर की जिस खप्परैली छत के नीचे महाराज बैठते थे, उसका ध्यान करने का महाराज ने परामर्श दिया।

सो, मर्म यह है कि प्रगट स्वरूप की जैसी है वैसी अपरंपार महिमा समझ कर, निर्दोषबुद्धि की सेवा कर लेनी और उनके अभिप्राय में जुड़ कर, वे जो मिले हैं, यही 'परमपद' मान कर सेवा करेंगे तो किसी भी प्रकार की कोई कसर रहेगी नहीं और आठों प्रहर अहोहोभाव ही रहेगा।

ऐसी प्राप्ति फिलहाल भी उपलब्ध है। सो, इस संदर्भ में सोच लेना चाहिए।

आज प्राप्ति का कोई पार नहीं है। परंतु, मायिकभाव बाधारूप होता है; वह हटा दें तो सुख के ढेर ही हैं।

* **गुरुवर्य योगीजी महाराज ने वच. मध्य 37 का निरूपण करते हुए कहा** – *जिसे अपनी प्रकृति टालनी ही हो, वो तो जो सत्पुरुष उसे मिले हैं, वे तत्काल टाल देते हैं; परंतु जिसे अपनी प्रकृति रखे रखनी हो, उसकी टलती नहीं है। मर्म यह है कि हमें अपनी प्रकृति में अच्छाई लग रही है, सो टलने से रही है। पर, यदि संत टोकें, डाँटें या तिरस्कार करें और तब भी विश्वास व प्रीति से उनका गुण ही लें तो न टले ऐसी प्रकृति भी टल जाए। संत स्वयं तो टोकते, डाँटते या तिरस्कार करते नहीं हैं, लेकिन प्रेरक बन कर अन्य मुक्तों को हमारे साथ ऐसा वर्ताएँ, तब यदि ऐसा मानें कि भगवान ही कर रहे हैं और केवल अपना ही दोष देखें व टोकने वाले का गुण ही लें तो जैसे कुत्ते की टेढ़ी पूँछ सीधी हो जाए ऐसा महाराज ने वरदान दिया है। सत्पुरुष इशारे में कह कर दृष्टांत देते हैं और तब भी जीव यदि न समझ पाए, तो टालने के लिए सत्संग में प्रसंग खड़े करके – ऐसा जोग देकर बल प्रदान करके जीव को शुद्ध करते हैं।*

  जिसे स्वभाव को रखे रखना है – एकांतिक होना नहीं है, उसके लिए यह बात नहीं है। यह तो एकांतिक भक्त की बात है। आज तो खूब सुगम किया है और कोई तिरस्कार तो करता नहीं, फिर भी थोड़ी-थोड़ी बात पर बुरा लग जाता है। फलस्वरूप जीव वृद्धि नहीं कर पाता।

  सो, इस शुभ दिन स्वभाव टालने के लिए संकल्प करना। सत्पुरुष की प्रत्येक क्रिया, वचन या दृष्टि में कुछ न कुछ अलौकिकता ही होती है। यह निहारने का यदि अभ्यास करें तो बड़े संत दर्पण की भाँति सारा दर्शन करवा देते हैं और अनुवृत्ति का ख्याल पड़ जाता है। फिर संत से पूछने की आवश्यकता नहीं पड़ती। परंतु, तीव्र श्रद्धा और विश्वास से संत से जुड़ जाना अनिवार्य है। तब, उनके अनुग्रह से दिव्यता का अनुभव होते, समग्र सत्संग दिव्य प्रतीत होता है और मूर्ति का सुख प्राप्त होते शांति-शांति हो जाती है। इस हेतु ही यह समागम है। सो, संबंध दृढ़ रखना। यदि संबंध टूट जाए तो सब कुछ तितर-बितर हो जाएगा। अतः संबंध का हमेशा सतत ख्याल रखना।

गुरुहरि काकाजी महाराज का अनुग्रह...

प्रगट प्रभु में सर्वोपरि निष्ठा होना अत्यंत कठिन बात है। श्रीजी महाराज ने वचनामृत अंत्य 24, 33 और मध्य 56 इत्यादि में बड़े-बड़े मुक्तों के उदाहरण देकर, शंका जताते हुए बताया है कि विपरीत परिस्थिति में, प्रगट भगवान और उनका अभिप्राय जानने वाले महामुक्तों तथा एकांतिकों के प्रति मनुष्यभाव आ जाता है और वे निम्न स्तर के भक्त भी बने रहें या न रहें। इसलिए **महाराज ने अपनी आत्मा या शरीर जो कि अक्षरब्रह्म हैं, वे तथा उनके साधर्म्य को पाए हुए मुक्तों के सिवा अन्य किसी का भी भरोसा नहीं बताया है।** ब्रह्मस्वरूप गुरुवर्य

शास्त्रीजी महाराज एवं जूनागढ़ प्रदेश के गुणातीतज्ञान के महामुक्तों ने प्रगट की ऐसी निष्ठा की दृढ़ नींव डाल कर, **मंदिरों में मूर्तिमान सनातन-सदा साकार दिव्य स्वरूपों को स्थापित करके**, आत्यंतिक कल्याण और जीतेजी ही ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म में जुड़ जाने के सनातन धर्म का राजमार्ग, असंख्य मनुष्यों के लिए हमेशा के लिए खोल दिया है।

जीव में **ऐसी निष्ठा दृढ़ करने के लिए अचलमति वाले किसी 'भगवदी' की संगत अनिवार्य है।** भगवदी में जितना अधिक दृढ़ विश्वास रख कर, उनकी आज्ञानुसार जितनी अधिक सेवा होगी, उतनी जीव में प्रगट की सर्वोपरिता की निष्ठा बैठेगी और जो प्राप्ति होगी। वो जीतेजी ही सुख, शांति और आनंद देगी। वर्ना प्रगट की - वे जैसे हैं वैसी – निष्ठा जीव में बैठती ही नहीं। प.पू. स्वामिश्री बार-बार इस बात को दोहराते हैं व यह अनुभव में भी आता है।

अतः वचनामृत प्रथम 37 तथा मध्य 17 के अनुसार, दृढ़ निश्चय व अनन्यनिष्ठा से प्रत्यक्ष स्वरूप में ही सर्वोपरिभाव रखने वाले किसी भगवदी के प्रति जो भक्त दिव्यभाव रखता है, उसे **'प्रगट की निष्ठावाला'** जाना जाता है। तो, प.पू. योगीजी महाराज को मिले हुए (पाए हुए) किसी अनुभवी भगवदी के प्रति अतिदृढ़ विश्वास से समग्र सत्संग में दिव्यभाव रख कर, सेवा और भक्ति की लगन लगा देनी; ताकि सब कुछ गुरुहरि अपने सिर पर लेकर अवश्य-अवश्य-अवश्यमेव हमारा संपूर्ण रूपांतर कर देंगे। इस बात की खातीरि भी अब होती जा रही है।

तो, गुरुहरि सभी श्रेयार्थी साधकों को शीघ्र ही परमपद का अधिकारी बना कर हमेशा के लिए सुखी कर दें- रखें यही अभ्यर्थना।

– अप्रैल, 1969

❀❀❀

शरणागत के अनुरागी गुरुहरि पप्पाजी का प्राकट्य दिन–1 सितंबर!

अहो! अंतर में आनंद की अनुभूति कराती **1 सितंबर**...
जब **गुरुहरि पप्पाजी** ने अनंत जीवों के कल्याण हेतु भारत की धरा को पावन किया।
अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को हमारे लिए आदर्श बनाया
और
हम सभी को दिव्य जीवन जीने की कला सिखाई।
गुरुहरि पप्पाजी की हर एक क्रिया में अपने ईष्टदेवों - आराध्य स्वरूपों की प्रणाली का ही दर्शन होता है, जैसे कि –
भगवान स्वामिनारायण ने वचनामृत गढडा मध्य 13 में
उनके संबंधवालों की सभा को अक्षरधाम के दिव्य मुक्त मानने का उपदेश दिया,
गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने भी कहा –
धूळा भक्त जैसे की महिमा समझोगे, तभी मेरी महिमा समझ पाओगे
और
गुरुवर्य योगीजी महाराज अलग ढंग से कहते –
सत्संगी के साथ सुहृद्भाव रखोगे, तो मुझे राज़ी होने में क्या देर लगेगी।
भले ही अलग-अलग समय व स्थल पर यह **'मूल रहस्य'** उजागर हुआ,
परंतु इससे एक बात की प्रतीति होती है कि परम तत्त्व तो सर्वत्र एक ही है।

यूँ, **गुरुहरि पप्पाजी** ने अपनी जीवनशैली से इसी सिद्धांत को उजागर किया–

यदि वाक़ई में अपने प्रगट प्रभु को राज़ी करना है या अपने वश करना है,

तो बस उनके संबंध वालों के लिए जीवन न्यौछावर कर देना चाहिए।

संबंधवालों में यदि लयलीन हो जाएँगे, तो प्रभु की मूर्ति भी सहजता से सिद्ध हो जाएगी।

यही हेतु था जो गुरुहरि पप्पाजी ने गुणातीत समाज के सभी मुक्तों के साथ

अपना अद्‌भुत संबंध स्थापित किया।

दिल की जिस सच्चाई से उन्होंने गुरुवर्य योगीजी महाराज को आत्मसात् किया,

उसी सत्यता से उन्होंने आत्मीय मुक्तों को अंगीकार करके अपनत्व प्रदान किया।

इससे भी अधिक, प्रभु की मूर्ति से अपने आश्रितों के जीवन की बैटरी हमेशा चार्ज रखी...

पथप्रदर्शक बन कर सभी के स्वभावों का परिवर्तन किया और उनके घर, देह व आत्मा को मंदिर बनाया।

ऐसे समर्थ होने के बावजूद भी प्रत्येक जीव के साथ

वे जो दासत्व, सेवकभाव, सुहृद्‌भाव, माहात्म्ययुक्त जीवन जिए हैं,

उसका वर्णन हमारी सीमित बुद्धि व दृष्टि से परे है।

परंतु, **'साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाए '**– इस कथन के अनुसार

प्रभुधारक विरल विभूति का माहात्म्य गुणातीत स्वरूपों के मुख से जानें

और

प्रगट स्वरूप का वचन 'वही सत्य' – ऐसी निष्ठा से जीवन जीने के लिए

गुरुहरि पप्पाजी के श्रीचरणों में **बंधुजोड़ी शताब्दी वर्ष** पर दिल की सच्चाई से प्रार्थना करें–

हे पप्पाजी ! आप गुरुवर्य योगीजी महाराज के साथ और उनके संबंध वालों के साथ जैसा जीवन जिए,

वैसी भक्ति, माहात्म्य व प्रेरणा हमें दीजिए,

ताकि आपकी कृपादृष्टि से सहज में हमें मिले दिव्य सुख के हम सही मायने में भोक्ता बनें

और

आपके अवतरण का हेतु सफल हो...

Centenial Celebration Years SANKARDA

प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी –

पप्पाजी यानि महिमा और माहात्म्य का मूर्तिमान स्वरूप ! महिमा का साक्षात्कार यानि पप्पाजी ! योगीजी महाराज के योग में आए, तब से ही केवल बापा को राज़ी करने के लिए ही उनका जीवन बापामय ही रहा। बापा की मूर्ति में ओतप्रोत रहे। बापा की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए मरजीवा होकर जंग खेली और इससे भी अधिक, भक्त के भक्त, सत्संगी के सत्संगी, सेवक के सेवक बन कर वे जिए। बापा के संबंध वाले मुक्तों और भक्तों का सब कुछ जँचा कर उन्हें अपनाएँ। प्रत्येक सैकण्ड उनके जीवन में से केवल रंकभाव और सेवकभाव ही टपकता।

जो अपने कल्याणकारी गुण, सत्ता, सामर्थ्य को छिपा कर वर्ते, जाग्रत रहते हुए कम बोले, वह ज़रूर प्रभु या प्रभु का स्वरूप ही हो सकता है। बौद्धिक मूल्यांकनों से जीने का मेरा स्वभाव। मेरी दृष्टि और मेरी बुद्धि से प्रभु के जिस

मूर्तिमान स्वरूप की वर्षों पूर्व मैंने कल्पना की थी, उसका दर्शन पप्पाजी के जीवन द्वारा हुआ। दिल से कहता हूँ कि वे प्रभु का ही स्वरूप हैं। हमारा कितना अहोभाग्य है जिसके फलस्वरूप संपूर्ण स्वरूप मिला! कल्पना भी न की जा सके, ऐसे दासत्वभाव से वे जी रहे हैं।

आध्यात्मिक इतिहास के पन्नों पर कई **'युगपुरुषों'** का विवरण मिलता है, लेकिन सेवक के सेवक होकर जीने का ऐसा अनुपम दर्शन तो ऐसे **'गुणातीत पुरुष'** के जीवन द्वारा ही साकार हुआ है। पप्पाजी में 'गुणातीत स्थिति' का मूर्तिमान दर्शन सहजता से होता है।

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी –

पप्पाजी को जिस प्रकार से हम निहारते हैं, उसी प्रकार वे हमारे साथ वर्तते हैं। हम यदि ऐसा मानें कि वे गृहस्थ हैं, तो वे उसी भाँति दर्शन कराते हैं। गृहस्थ की भाँति वर्तते हुए वे कहते हैं– *मैं गृहस्थ हूँ, सेवा करना मेरा धर्म है। हम जैसे गृहस्थों को तो सेवा ही करनी चाहिए।* यूँ जता कर वे गृहस्थ बन जाते हैं। कभी-कभी स्वयंसेवक बन कर सेवा करने लग पड़ते हैं। उन्हें मित्र मानें तो मित्र बन कर स्पष्टता से साफ़-साफ़ कह देते हैं। दोस्ती दावे से स्पष्ट कह देंगे। इसी प्रकार यदि उनके प्रति साक्षात् प्रभु का भाव रखें तो उसी रीति से वे वर्तते हैं। उन्हें जैसा मानेंगे वैसा दर्शन कराएँगे ऐसा स्वरूप है। उनका वर्तन ही हमें प्रेरणा-सूझ देता है।

संतभगवंत प.पू. साहेबजी –

पिता के रूप में पप्पाजी ने हमारा मार्गदर्शन किया, माँ के रूप में हम सभी के चैतन्य का जतन किया। किसी का भी दोष-गुण अथवा कार्य-कौशल्य की कक्षा देखे बिना केवल यही देखा कि तुम मेरे आश्रित हुए हो न! बस, इसी को देखते हुए हमारे कार्य-कौशल्य और क़ाबिलीयत के अनुरूप हमें सेवा सौंपी। कथावार्ता-गोष्ठि करने वाले को बातें करने की, भागादौड़ी करने वाले को वैसी, भोजन बनाने वाले को रसोई की सेवा दी। हर एक की रुचि के अनुसार, जिसकी जो कार्य-कुशलता थी, उसे भक्तिरूप क्रियायोगों में इस्तेमाल करके सच्चा जीवनमुक्त बनाएँ। उनकी (पप्पाजी की) आंतरिक प्रसन्नता देह के भावों का विसर्जन करती है। पप्पाजी की प्राप्ति चिंतामणि तुल्य है। उनका चिंतन करेंगे, मनन करेंगे और उनकी आज्ञा को निरंतर ख्याल में रखेंगे, तो उदासी, विक्षोभ, अभाव कहाँ चले जाएंगे वह पता भी नहीं चलेगा और वचनामृत अंत्य. 26 ऑटोमॅटिक सिद्ध हो जाएगा।

प.पू. हरिभाई साहेब –

जोगीबापा के संकल्प को आत्मसात् करके पप्पाजी हम सबके लिए जोगीस्वरूप बने। ऐसे पुरुष का जीवनदर्शन हम किस प्रकार कर सकेंगे ? हमारे अनुभव के क्षुल्लक प्रसंगों की कुछ बातें कर लें, लेकिन संपूर्ण परिचय तो कैसे दे सकते हैं ? वे तो स्वयं ही अपने स्वरूप को पहचानते हैं। दिव्य तत्त्व-परब्रह्म तत्त्व उनके द्वारा कार्य करता है। महाराज ने कहा है–'मेरी मूर्ति की महिमा के छोर को मैं ही नहीं पा सकता'। ऐसा ही प.पू. पप्पाजी का है। फिर भी, उनकी एक विशिष्टता यह है कि उनकी आज्ञा में-मरज़ी में हम जितना रहेंगे, इतनी प्राप्ति वे हमें अपने जीवन में करा कर ही चैन लेंगे। पप्पाजी इतने समर्थ हैं कि उनके संपर्क में आया जीव भगवान रखने के सिवा अन्य कुछ भी उद्यम नहीं करेगा। हम सबने इसका अनुभव किया है।

❁❁❁

अनुष्ठान शिविर – 2018

मई माह के आगमन से ही एक अनूठा एहसास होने लगता है, क्योंकि प्रगट प्रभु की परावाणी द्वारा मिले मार्गदर्शन से भक्त समुदाय सर्व प्रकार से चार्ज हो जाता है। इसी हेतु मई महीने के मध्य से प्रारंभ होती है– **'अनुष्ठान शिविर'**! शिविर के दौरान लगातार एक महीने तक सत्संगी परिवार के सभी सदस्य एक-दूजे से मिल कर आनंद का अनुभव करते हैं।

अबकी बार शिविर की मंगल शुरुआत **12 मई–गुरुहरि योगीजी महाराज की 126वीं प्राकट्य तिथि** एवं **प.पू. गुरुजी की 57वीं भागवती दीक्षा तिथि** के शुभ दिन हुई। संयोगवश एक दिन पहले ही यानि **11 मई** को **अंग्रेजी तारीख के अनुसार प.पू. गुरुजी का 57वाँ भागवती दीक्षा दिन** था।

इस वर्ष मार्च महीने में हमारी पाँच बेटियों ने भागवती दीक्षा प्राप्त की थी। उन्हीं के साथ दिल्ली के सत्संगी **प.भ. आनंद शुक्लाजी एवं सौ. माया शुक्लाजी** की 18 वर्षीय बेटी **पू. नितिका (लतिका)** प.पू. दीदी को देखते ही दीक्षा लेने के लिए उत्सुक हो गई थी। थोड़े महीने पहले ही तो प.पू. दीदी से वो मिली थी! **इतनी छोटी किशोर आयु में उसे मन में ऐसा हुआ कि–**

ऐसा जोग मिलता है, तो शादी करके प्रारंभ के दो-तीन साल के आनंद के लिए जिंदगीभर क्यों बोझ ढोना ?

पूर्व के मुक्त के सिवा अन्य किसी की ऐसी सोच हो ही नहीं सकती। परंतु, 12वीं कक्षा की परीक्षा होने के कारण तब वह दीक्षा ले न पाई। सो, प.पू. गुरुजी के भागवती दीक्षा के मई के इस अविस्मरणीय दिन पर प.पू. दीदी के वरद् हस्तों उसने पार्षदी दीक्षा प्राप्त की। 'मीरां रानी' की पूजा की थाली–तुलसी, चंदन, केसर, कंकु व मौली में समाविष्ट करते हुए उसे **'बाती'** नाम दिया गया और... **12 मई** को अनुष्ठान शिविर के प्रारंभ से पूर्व **प.पू. हंसा दीदी** द्वारा वीडियो से संकल्प करा के **प.पू. दीदी** के करकमलों से **भागवती दीक्षा** प्राप्त की। तब **प.भ. लक्ष्मी शुक्लाजी** एवं **प.भ. आनंद शुक्लाजी ने प.पू. गुरुजी को** सभी की ओर से **हार अर्पण** किया।

तत्पश्चात् प.भ. मल्कानी अंकल एवं प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी (मुंबई) ने दीप प्रज्ज्वलित करके **'अनुष्ठान शिविर'** का उद्घाटन किया। परंपरागत रूप से शिविर में रोज़ सभी हरिभक्तों को चंदन का तिलक लगाया जाता, चालीस मिनिट स्वामिनारायण मंत्र का जाप होता, पू. राकेशभाई, पू. हृदय, पू. सुबोधजी एवं पू. डॉ. दिव्यांग भजन प्रस्तुत करते और श्री अजय-संजय तनेजा ग्रुप भी प्रसंगोपात भजनों से माधुर्य का एहसास कराता। तत्पश्चात् हरिभक्त अपने अनुभव दर्शन से खूब मननीय बातें करके सबका हृदय स्पर्श करते। अंत में प.पू. गुरुजी आशिष देते और विसर्जन प्रार्थना के बाद धुन से चार्ज किया गया प्रासादिक जल व स्वामिनारायण संप्रदाय का मॉनोपॉलाइज़्ड मगज़ का प्रसाद दिया जाता।

वर्षों पूर्व 'स्वामिनारायण प्रकाश' के लिए **गुरुहरि काकाजी महाराज** द्वारा लिखवाए लेखों की मॅटर को दिसंबर 2017 में **प.पू. गुरुजी** ने **'पंचम पुरुषार्थ'** ग्रंथ के रूप प्रकाशित करके, गुणातीत समाज के मुक्तों पर

अद्‌भुत कृपा की थी। इस अनुष्ठान शिविर में प.पू. गुरुजी की आज्ञा से **पू. आनंद भगत** ने व्यासपीठ पर बैठ कर **'पंचम पुरुषार्थ'** के लेखों का पठन किया और प.पू. गुरुजी द्वारा समझाया गया। प्रथम दिन ही प.पू. गुरुजी ने शिविर का रहस्य उजागर करते हुए कहा –

*...काकाजी एक बार बोले थे –अपना कोई काम न बनता हो, अपनी कोई मुराद पूरी न होती हो, तो अनुष्ठान कराओ। वो संकल्प शुभ भावना की, शुभेच्छा की पूर्ति अवश्य करता है। उसी में से ये शब्द कॉईन किया – **'अनुष्ठान शिविर'**... तो काकाजी की इस बात को हम खूब विश्वास से मानें कि ये एक महीना जो भजन हम करें, उसके फलस्वरूप हमारी पूरी सोच सत्संग की बातें सुनते हुए ऐसी बदल जाए कि **'शुभ संकल्प'** भी **'सत्य संकल्प'** के अंदर परिवर्तित होकर हमें दिव्य जीवन की एक राह पर ले जाए। इसी हेतु कथा क्या करनी ? ये आनंद को व्यास पीठ पर बैठा देख कर मुझे याद आया कि भागवत् की सप्ताह में छोटी आयु के शुकदेवजी बैठे थे। शुकदेवजी के मुख से कथा सुनने से परिक्षित का सात दिन में मोक्ष हुआ। 'मोक्ष' यानि मोह का क्षय! इसी भावना से प्रगट स्वरुप काकाजी की स्मृति के साथ भजन करें और ऐसी कॉन्शियसनेस से ही कथा सुनें। योगीबापा ने आशीर्वाद दिया है कि आज तो सात दिन नहीं, सात घंटे में भी भगवान वश में हो सकते हैं। इस बात पर विचार करें, तो ख्याल पड़ेगा कि प्रगट की उपासना कितनी पावरफुल होगी। तुलना करते हुए काकाजी कई बार कहते कि लाखों टन कोयला फूँकने पर जो एनर्जी उत्पन्न होती है... इससे ज़्यादा एक एटम को स्पलीट करने से होती है, जो 'एटम बम' के रूप में सब तबाह भी कर सकती है।*

हमारे भीतर रहे हुए सारे मलिन भाव ख़ास तो हठ, मान, ईर्ष्या के भाव हमें परेशान करते हैं। ये सभी अहम् पर आधारित हैं। अहम् पिघल जाए, तो ये हठ, मान, ईर्ष्या रहेगा नहीं। इसका सीधा-सादा उपाय प्रगट की स्मृति के साथ भजन है। इसके सिवा कोई उपाय नहीं है। कितनी ही कोशिश करें, लेकिन हठ, मान, ईर्ष्या टल नहीं सकता। तो ऐसे स्वरुप की स्मृति के साथ हम भीतर में प्रार्थना करते हुए स्वामिनारायण भजन करते रहें कि महाराज मेरी ये सब चीज़ टाल दो...

काकाजी कहते थे कि भगवान के लिए भी एक क़ायज़ा है कि वे तुम्हें गाईड कर सकते हैं, दिशा दिखा सकते हैं, लेकिन जबर्दस्ती तुम्हें खींच नहीं सकते...

12 जून की सायं **गुरुहरि काकाजी महाराज की शताब्दी** के मंगल दिन गुरुहरि काकाजी महाराज की परावाणी से इस शिविर की पूर्णाहुति हुई। सभी ने आमरस का प्रसाद लिया। पूरे महीने प.पू. गुरुजी ने बारीकी से साधना मार्ग की जो बातें समझाईं, उसका लाभ दूर-सुदूर रहते मुक्तों ने इंटरनेट के माध्यम से घर बैठे भी प्राप्त किया। सो, जिन मुक्तों ने इंटरनेट की यह जो सेवा की, उन्हें खूब-खूब धन्यवाद !

साथ ही, शताब्दी वर्ष में सभी स्वरूपों के श्रीचरणों में प्रार्थना कि हमारी चेतना की प्रगति के लिए आप जो निरंतर परिश्रम करते हैं, उसे निहारने की दृष्टि हमें प्राप्त हो, ताकि आपकी रुचि अनुसार अब हमारा तंत्र हो जाए...

❁❁❁

प.पू. गुरुजी को गुणातीत समाज की सर्वदेशियता का एहसास कराता वडोदरा-अमदावाद-राजकोट विचरण

राजकोट के **पू. कांतिभाई पटेल** पिछले बारह-पंद्रह वर्ष पूर्व प.पू. गुरुजी के जोग में आए और एक अपनेपन से उनके साथ जुड़ गए। इस वर्ष जून के महीने में उन्होंने इच्छा व्यक्त की थी कि **15 जुलाई** को उन्हें प.पू. गुरुजी के वरद् हस्तों से अपने शोरूम का उद्‌घाटन करवाना है। सो, निमंत्रण कार्ड पर प.पू. गुरुजी का नाम लिखवाने के लिए उन्होंने सेवक पू. आशिष से डिटेइल माँगी।

प.पू. गुरुजी की अत्यंत कृपा है कि शुरुआत से ही उन्होंने सेवकों को एक विशिष्ट अनुशासन में ढाला है कि किसी भी हरिभक्त का किसी भी विषय में मॅसेज हो या कोई छोटे से छोटा भी कार्य हो, उस बारे में वे अपने बड़ों को सूचित करके, उनके निर्देशानुसार ही वह कार्य पूर्ण करें। यही कारण है कि प.पू. गुरुजी व दिल्ली मंदिर से जुड़े सेवक एक निश्चिंतता महसूस करते हैं कि प्रभु कभी भी हमारी किसी वृत्ति या अहं का पोषण या कोई गलती नहीं होने देंगे। अतः पू. कांतिभाई द्वारा माँगी डिटेइल के बारे में पू. आशिष ने प.पू. गुरुजी को बताया।

गुरुहरि काकाजी महाराज का एक सिद्धांत है कि अगर किसी स्थान पर उन्हें अपने किसी निजी हरिभक्त द्वारा भी बुलाया गया हो, तो गुणातीत समाज की एकता और अखंडता को बरकरार रखते हुए, वे वहाँ के मुखिया/प्रमुख को अपने साथ ले जाएँ और उनका परिचय कराएँ। गुरुहरि काकाजी महाराज के पद्‌चिन्हों पर चलते प.पू. गुरुजी ने अपने नाम के साथ-साथ, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी द्वारा संचालित राजकोट के **'आत्मीय धाम'** की बागडोर संभालते, तेजस्वी संत **प.पू. त्यागवल्लभस्वामिजी** का नाम भी कार्ड में लिखने के लिए सूचन किया। यूँ, साथीमुक्तों को साथ में या उन्हें आगे रख कर चलने में ही प.पू. गुरुजी जीवन की धन्यता मानते हैं। इस प्रकार, प.पू. गुरुजी का राजकोट-अमदावाद जाने का कार्यक्रम बना। और... **इस ट्रिप में गुरुहरि काकाजी महाराज को जो सबसे अधिक पसंद था, उस 'सर्वदेशियता' का उन्हें वाक़ई सर्वत्र दर्शन हुआ।**

12 जुलाई की सुबह 11:00 बजे पू. संकल्पस्वामी एवं मंदिरों के युवा सेवकों के साथ प.पू. गुरुजी दिल्ली मंदिर से एयरपोर्ट के लिए रवाना हुए। दोपहर की इंडिगो फ्लाईट से करीब पौने चार बजे वडोदरा पहुँचे। समढियाळा के **पू. माधवचरणस्वामिजी बीमार होने के कारण हरिधाम आए थे, सो उन्हें मिलने के लिए प.पू. गुरुजी एयरपोर्ट से सीधा हरिधाम-सोखड़ा गए।** वहाँ 'योगी आश्रम' में अक्षरनिवासी प.पू. कोठारीस्वामिजी के कमरे में प.पू. शास्त्रीस्वामिजी, प.पू. दासस्वामिजी एवं संतों से मिले और प.पू. कोठारीस्वामिजी के अंतेवासी सेवक पू. योगीस्वामिजी का भाव ग्रहण किया।

इस वर्ष गुरुहरि काकाजी महाराज की शताब्दी निमित्त प.पू. गुरुजी ने संतों के लिए लकड़ी के (वुडन) **'स्मृति ग्लास'** बनवाए थे। पर, वे ज़्यादा तो तैयार नहीं हो पाए, सो चार ग्लास प.पू. गुरुजी अपने साथ ले गए थे। उनमें से तीन प.पू. शास्त्रीस्वामिजी, प.पू. दासस्वामिजी और प.पू. संतस्वामिजी को दिए।

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के दर्शन हेतु प.पू. गुरुजी सांकरदा जाने वाले थे। परंतु, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की तबियत नादुरस्त होने के कारण वे अमदावाद डॉक्टर के पास गए थे। अतः सोखड़ा से प.पू. दासस्वामिजी एवं उनकी जोड़ के साधु के साथ प.पू. गुरुजी अमदावाद गए। हालाँकि **प.पू. दासस्वामिजी** की तबियत भी नरम-

गरम थी, लेकिन प.पू. गुरुजी पहली बार राजकोट–'आत्मीय धाम' जाने वाले थे, इसलिए वे प.पू. गुरुजी के साथ निकले थे। देर सायं को अमदावाद की 'गुणातीत ज्योत' में प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी का दर्शन करके प.पू. गुरुजी व सभी ने वहाँ अल्पाहार लिया। वहाँ से पू. शैलेषभाई एवं पू. परिमलभाई के घर 'हेतवी टावर्स' गए और रात्रि का भोजन लेकर विश्राम किया।

दूसरे दिन **13 जुलाई** की सुबह फिक्स्ड टाईम धुन की। दिल्ली से पू. चिंतन अग्रवाल वगैरह एवं मुंबई से पू. दीपक अग्रवाल अपने जन्मदिन हेतु प.पू. गुरुजी का दर्शन करने के लिए अमदावाद आए। सुबह के नाश्ते के बाद प.पू. गुरुजी एवं सभी पू. विपुल मामा की दुकान पर पधरामनी करते हुए दोपहर का भोजन करने उनके घर गए। इनके बगल में ही अक्षरनिवासी **पू. प्रहलाद्भाई गज्जर** जो कि दिल्ली मंदिर के प्रथम आर्किटेक्ट थे, उनके सुपुत्र **पू. मृगेशभाई** का घर था। वहाँ जाकर धुन करके एवं पू. प्रहलाद्भाई की स्मृतिरूप 'देरानी जिठानी' का आइसक्रीम ग्रहण करके हेतवी टावर्स लौटे। सायं अमदावाद के मुक्तों ने प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दासस्वामिजी के सान्निध्य में धुन की। पू. परेशभाई दोशी ने भजन गाया और सभी सेवकों को शुभाशीष देते हुए प.पू. गुरुजी ने केक का प्रसाद दिया। वहाँ सभा में स्वामी की बातें पढ़वाते हुए **प.पू. गुरुजी** ने बताया–

जैसे अपनी देह के संबंधी का पक्ष अपनी अच्छाई पेशी छोड़ कर रखते हैं, वैसे भगवान के भक्त का पक्ष रखना चाहिए। आत्मबुद्धि-प्रीति युक्त सत्संग ही दृढ़ रहता है।

सभा के बाद सभी ने सैंडविच और भेलपूरी का प्रसाद लिया।

14 जुलाई की सुबह रूद्रपुर के पू. विजय शर्मा और दिल्ली के पू. दीपक सेठ भी प.पू. गुरुजी के साथ अनेरी स्मृतियाँ बटोरने के लिए अमदावाद पहुँच गए थे। फिक्स्ड टाईम धुन के बाद नाश्ता करके, प.पू. गुरुजी व प.पू. दासस्वामिजी मुक्तों के साथ राजकोट के लिए रवाना हुए। अमदावाद के पू. शैलेषभाई आचार्य, पू. दिलीपभाई ठक्कर, पू. परेशभाई दोशी एवं पू. कलश शाह भी प.पू. गुरुजी के साथ गए।

राजकोट में दाख़िल होने से पूर्व कुवाडवा में **पू. चकुभाई** के पेड़े की दुकान पर पधरामनी की। खूब भावना से उन्होंने मंदिर के लिए रवादार पेड़े का प्रसाद दिया। प.पू. गुरुजी के साथ गए मुक्तों को पकौड़े इत्यादि का नाश्ता करवा कर आनंद करवाया। राजकोट आते हुए रास्ते में प.पू. दासस्वामिजी के स्वास्थ्य को अधिक तकलीफ हुई, सो वे यहाँ से सीधा 'आत्मीय धाम' गए और प.पू. गुरुजी संतभगवंत प.पू. साहेबजी से खूब आत्मीयता से जुड़े **पू. मुकुंदभाई** के घर पहुँचे।

संतभगवंत प.पू. साहेबजी ने पूरे गुणातीत समाज की कैसी महिमा भरी होगी, उसका दर्शन पू. मुकुंदभाई एवं परिवार द्वारा किए गए आदर-सत्कार से हुआ।

संतभगवंत प.पू. साहेबजी के भाव से ही उन्होंने प.पू. गुरुजी की आवभगत की। पू. मुकुंदभाई एवं पू. परेशभाई दोशी ने भजन प्रस्तुत किया। राजकोट 'आभला' कारीगरी के कपड़ों के लिए प्रसिद्ध है। सो, **प.पू. दीदी** ने दिल्ली मंदिर से जुड़ी सत्संग परिवार की कुछ बेटियों के लिए पू. मुकुंदभाई की पत्नी **सौ. धर्मिष्ठा बहन** को ऐसे सूट लाने के लिए फोन पर कहा। दुकानों का अवकाश था, लेकिन एक दुकान वाले से विनती करके, भक्तिभरे हृदय से सौ. धर्मिष्ठा बहन सूट लेकर आईं और पू. अभिषेक को सौंपे।

पू. मुकुंदभाई के घर से पाँच मिनिट की दूरी पर **प.पू. हंसा दीदी** संजोगवश **पू. मनोजभाई दुबे** के घर आई हुई थीं। प.पू. हंसा दीदी को पता चला कि प.पू. गुरुजी राजकोट आए हैं, तो उन्होंने पू. मनोजभाई के यहाँ प.पू. गुरुजी को आने का आग्रह किया। सो, पू. मुकुंदभाई के साथ प.पू. गुरुजी उनके घर गए। वहाँ पू. मुकुंदभाई ने भजन गाया। प.पू. गुरुजी का स्वागत करने हेतु पू. मनोजभाई ने मोतियों का खूब सुंदर हार अर्पण करने की इच्छा प्रकट की; जो दिल्ली मंदिर में स्थापित गुरुहरि पप्पाजी की मूर्ति को शताब्दी वर्ष निमित्त दिसंबर में पहनाने के लिए प.पू. गुरुजी ने रख लिया।

धुन व अल्पाहार करके प.पू. गुरुजी **पू. अशोकभाई राठोड़** के घर गए। पहले प.पू. गुरुजी ने उनसे कहा था कि वे उनकी फैक्टरी पर जाएंगे। लेकिन, पू. अशोकभाई की आंतरिक इच्छा थी कि प.पू. गुरुजी घर पर आएं और... उनके घर पर ही जाना हुआ! दरअसल, **भगवान भक्तों की भावना पकड़ कर चाहे कितने ही बड़े संत हो या उनके सेवक हों, उन्हें भक्तों की मरज़ी में ढाल देते हैं।** यहाँ पू. अशोकभाई ने प.पू. गुरुजी को एक अमूल्य भेंट दी।

यह वर्ष गोंडल मंदिर में स्थित मूल अक्षरमूर्ति श्री गुणातीतानंदस्वामिजी के समाधि स्थल 'अक्षरदेरी' की सार्ध शताब्दी का वर्ष है। इस उपलक्ष्य में, बॅप्स ने मंदिर एवं देरी का नवीनीकरण किया है। सो, वहाँ से प्राप्त अक्षरदेरी के फ़र्श का पुराना प्रासादिक पत्थर का एक टुकड़ा पू. अशोकभाई ने प.पू. गुरुजी को दिया। यह भेंट प.पू. गुरुजी के लिए स्मृतिदायी ही कही जाए। वो इसलिए कि–

❋ इसी गोंडल मंदिर में घनश्याम महाराज के समक्ष गुरुवर्य योगीजी महाराज ने गुरुहरि काकाजी महाराज को 'साक्षात्कार' करवाया था

और

गुरुहरि काकाजी महाराज पर जब केस चल रहा था, तब गुरुवर्य योगीजी महाराज की आज्ञा से गुरुहरि काकाजी महाराज ने अक्षरदेरी की लाख-लाख प्रदक्षिणा की थी।

सो, देखा जाए तो उस **महाप्रासादिक फ़र्श का यह पत्थर है।**

❋ इसी स्थान में तो 1960 की रामनौमी के दूसरे दिन प.पू. गुरुजी ने गुरुवर्य योगीजी महाराज के वरद् हस्त त्यागाश्रम की **पार्षदी दीक्षा** ली थी।

इससे भी अधिक–

❋ 1965 में गुरुवर्य योगीजी महाराज ने शरद्पूर्णिमा के महामंगलकारी 'अक्षरब्रह्म' के प्राकट्य दिन पर **प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी को हाथ में श्रीफल पकड़ा कर आहुति देते हुए आशीर्वाद दिया था–** ***जैसे 'डभाण' गाँव में महाराज ने गुणातीतानंदस्वामी को दीक्षा दी थी, वैसी दीक्षा आज 'प्रभुदास' (प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी) को दी जाती है। जाओ, तुम्हें माया बाधित नहीं होगी।***

और तो और–

❋ सभी को विदित है कि गुरुवर्य योगीजी महाराज का यह अत्यंत प्रिय स्थान है; सो ही ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज ने उनका समाधि स्थान यहीं पर नज़दीक में बनवाया है।

अतः वैसे भी अक्षरदेरी का दर्शन करने जाने की प.पू. गुरुजी की **ख़्वाईश** थी।

पू. अशोकभाई के यहाँ अल्पाहार करके प.पू. गुरुजी 'आत्मीय धाम' गए। वहाँ **प.पू. त्यागवल्लभस्वामिजी** ने हार पहना कर प.पू. गुरुजी का अंतर से स्वागत किया। प.पू. गुरुजी ने तब प.पू. त्यागवल्लभस्वामिजी को भी शताब्दी का 'स्मृति ग्लास' दिया। पू. मुकुंदभाई अपने सुपुत्र को साथ लेकर 'आत्मीय धाम' तक प.पू. गुरुजी के साथ रहे। रात को प.पू. गुरुजी 'आत्मीय धाम' में ठहरने वाले थे, सो **पू. रामजीभाई मवाणी, पू. कानजीभाई पटेल** जैसे स्थानीय मुक्त प.पू. गुरुजी के दर्शनार्थ आए। गुरुहरि काकाजी महाराज के समय के पुराने जोगी माणावदर के **पू. जयराम बापा, पू. डॉ. नलीनभाई भट्ट** आए थे। उन्होंने गुरुहरि काकाजी महाराज के कई प्रसंगों का महिमागान किया। रात्रि भोजन के बाद प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दासस्वामिजी की निश्रा में प.पू. त्यागवल्लभस्वामिजी द्वारा आयोजित राजकोट का 'बर्फ का गोला', 'सॉडा ड्रिंक' और 'शॅक' इत्यादि लेकर मुक्तों ने आनंदोब्रह्म किया।

15 जुलाई की सुबह नित्य क्रिया से फ़ारिग होकर प.पू. गुरुजी ने पूजा में धुन की। तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी, प.पू. त्यागवल्लभस्वामिजी एवं कई मुक्त **पू. कांतिभाई पटेल** के शोरूम का उद्घाटन करने के लिए गए। वहाँ प.पू. गुरुजी ने तकरीबन दस मिनिट एकाग्रचित्त से धुन कराई। तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी व प.पू. त्यागवल्लभस्वामिजी ने दीप प्रज्ज्वलित करके उद्घाटन किया और प.पू. त्यागवल्लभस्वामिजी ने पू. कांतिभाई को शताब्दी का चाँदी का नोट एवं गुणातीत समाज व भारतीय फ्लॅग वाला मोमेन्टो दिया। तब **प.पू. गुरुजी** ने **संतभगवंत प.पू. साहेबजी** द्वारा मान्य किए आशीर्वाद की स्मृति कराई –

जिसके यहाँ यह फ्लॅग लहराता होगा, उसकी विजय पताका फहरती रहेगी।

सो, यह पटेल स्टील का काम भी डेढ़ा हो ही जाएगा और... पू. कांतिभाई से कहा – *त्यागवल्लभस्वामी यहाँ रहते हैं, उनके साथ दोस्ती बनाए रखना।*

पू. कांतिभाई को दिल्ली की बहनों के आश्रम के लिए एक झूला भेजने की भावना थी, सो प.पू. गुरुजी से झूले का ड़िजाईन पसंद करवाया। यहीं पर प.पू. गुरुजी से जुड़े पुराने जोगी पू. वल्लभभाई फल्दु और पू. रामजीभाई मवाणी, पू. कानजीभाई पटेल भी दर्शन हेतु आए।

यूँ तो गोंडल मंदिर जाने का कोई कार्यक्रम नहीं था, लेकिन प.पू. गुरुजी की **ख़्वाईश** पूरी करने के लिए मानो दिल्ली से गए युवकों ने इच्छा व्यक्त की कि यदि प.पू. गुरुजी आएंगे, तो हम गोंडल मंदिर जाएंगे। अतः पू. कांतिभाई का पूरा शोरूम घूम कर, प.पू. गुरुजी एवं प.पू. त्यागवल्लभस्वामिजी मुक्तों के साथ गोंडल मंदिर के लिए रवाना हुए। गोंडल - अक्षरदेरी का दर्शन करके, गुरुवर्य योगीजी महाराज के समाधि स्थान पर गए।

गोंडल मंदिर और गुरुवर्य योगीजी महाराज के समाधि स्थल का नवीनीकरण इस प्रकार हुआ है कि अब ये दोनों का परिसर एक ही लगता है। गुरुवर्य योगीजी महाराज की मूर्ति के समक्ष धुन करते हुए, प.पू. गुरुजी के मुख के भाव से ऐसा प्रतीत होता था, मानो वे प.पू. बापा से गद्गद् होकर प्रार्थना कर रहे हों। संभव है कि प.पू. गुरुजी को प.पू. बापा के साथ की स्मृतियाँ इदम् हो आई होंगी। मंदिर में भीड़ का दर्शन करके प.पू. गुरुजी को मूल अक्षरमूर्ति श्री गुणातीतानंदस्वामिजी के आशीर्वचन का स्मरण हुआ कि पत्ता-पत्ता स्वामिनारायण का भजन करेगा। वो आज ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज, प्रगट ब्रह्मस्वरूप महंतस्वामी महाराज, प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी, संतभगवंत प.पू. साहेबजी जैसे प्रभुधारक संतों द्वारा साकार होता नज़र आता है।

और... 'अक्षरदेरी' महाचमत्कारिक स्थल है, जहाँ शुभ और सत्य संकल्प पूर्ण होते हैं – इसी आस्था के साथ **प.पू. गुरुजी** ने यहाँ तीन संकल्प किए :

- ***हे बापा ! जिस हेतु आपने मुझे दीक्षा दी है, वो इसी जन्म में सिद्ध करवा देना।***
- ***प्रगट स्वरूपों के संबंध वाले सभी भक्तों को मैं कैवल्यमूर्ति मानूँ, ऐसा मुझे बना देना।***
- ***गुणातीत समाज के हम सभी संत, समर्पित युवक, संत बहनें व भक्त सहजता से अक्षरधाम का सुख, शांति व आनंद भोगते हो जाएँ।***

प.पू. त्यागवल्लभस्वामिजी ने आत्मीय धाम के सेवकों को पहले ही भेज कर यहाँ भी बहुत अच्छी व्यवस्था कर रखी थी।

यहाँ से प.पू. गुरुजी एवं सभी **श्री कृष्णजी अदा की देरी** का दर्शन करने के लिए गए। वहाँ भी प.पू. गुरुजी को प.पू. बापा और **प.पू. काकाजी की स्मृति** इदम् हो गई।

यहाँ एक बार किसी ने प.पू. बापा से कहा – *हमने तो कृष्णजी अदा को कभी देखा नहीं है।*

तब प.पू. बापा बोले – *यदि कृष्णजी अदा को देखना हो, तो दादुभाई को देख लो।*

प.पू. बापा का इशारा यह था कि श्रीजी महाराज और स्वामी को समर्पित हुए श्री कृष्णजी अदा गृहस्थ में रहते हुए ब्रह्मस्वरूप की कक्षा को पाए थे, वैसे आज गुरुहरि काकाजी महाराज हैं।

प.पू. अदाश्री की देरी की प्रदक्षिणा करके प.पू. गुरुजी एवं सभी 'आत्मीय धाम' लौटे। थोड़ी देर प.पू. दासस्वामिजी के साथ गोष्ठि करने के बाद प.पू. गुरुजी एवं सभी ने दोपहर का भोजन किया। सायं करीब पाँच बजे तक **पू. दिलीपभाई ठक्कर** द्वारा जोक्स सुन कर सभी ने आनंद किया। तत्पश्चात् संतों द्वारा भावभरी विदाई लेकर प.पू. गुरुजी एवं सभी **'श्रीहरिदर्शनम् मंदिर'** का दर्शन करने गए।

प.पू. त्यागवल्लभस्वामिजी जैसे बुद्धिशाली, डायनेमिक साधु की भक्ति से प.पू. गुरुजी खूब राज़ी हो गए। प.पू. गुरुजी के साथ गए मुक्तों ने देखा कि इतनी फाइलें तो शायद मिनिस्टर्स जैसों की टेबल पर नहीं होंगी, जितनी उनकी टेबल पर थी। कहने का तात्पर्य यह है कि सिर्फ 'आत्मीय धाम' का नहीं, बल्कि प.पू. स्वामिजी द्वारा शुरू करी गई हरिधाम की सारी एज्युकेशनल इन्स्टीट्यूट्स का संचालन भी वेल ऑर्गेनाइज़्ड वे में चलाते हुए, कई मीनिस्टर्स इत्यादि से मेलजोल रख कर, संस्था के कार्य की प्रगति कराने वाले **अत्यंत व्यस्त साधु, आत्मीयता व सेवकभाव से लगातार दो दिन प.पू. गुरुजी एवं मुक्तों की सेवा में रहे।**

अंत में जब प.पू. गुरुजी राजकोट एयरपोर्ट के लिए रवाना हुए, तब भी प.पू. गुरुजी के खूब मना करने के बावजूद, प.पू. गुरुजी की सुविधा हेतु वे एयरपोर्ट में अंदर तक छोड़ने के लिए आए।

प.पू. गुरुजी अकसर कहते हैं – ***शिष्य का वर्तन ही गुरु की सच्ची महिमा है।***

प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी कहते हैं – ***नवधा भक्ति में 'दासत्व' श्रेष्ठ है।***

ऐसी **दासत्वभक्ति का दर्शन कराते प.पू. त्यागवल्लभस्वामिजी का वर्तन ही प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी की महिमा का संपूर्ण परिचय दे रहा है।**

और... 'आत्मीयता - सर्वदेशीयता' की भावना से भरसक 'आत्मीय धाम' की साधक बहनों द्वारा प्लेन के लिए दिया गया प्रसाद लेकर, एयर इंडिया से देर सायं 7:30 बजे प.पू. गुरुजी एवं कुछ मुक्त दिल्ली के लिए रवाना हुए। अन्य कुछ मुक्त अगले दिन अमदावाद से दिल्ली आए।

सच, राजकोट के संतों-मुक्तों-हरिभक्तों ने **बिना कोई भेददृष्टि** कैसे अपनेपन से सेवा की होगी कि दिल्ली लौटने के बाद प.पू. गुरुजी लगातार उन सभी की सेवा-आवभगत याद करते रहे।

भगवान स्वामिनारायण एवं सभी गुणातीत स्वरूपों के श्री चरणों में प्रार्थना कि सेवा-भक्ति के ऐसे उदाहरणों से प्रेरणा पाकर, हर प्रसंग पर वर्त कर हम 'प्रगट प्रभु' को राज़ी करें...

चातुर्मास के दौरान

(यानि दिनांक 23 जुलाई, सोमवार से 19 नवंबर, सोमवार तक)

भगवान और संत की प्रसन्नता हेतु सभी सत्संगी निम्न नियमों का पालन करें।

1. सावन के महीने यानि– **28 जुलाई, शनिवार** से **9 सितंबर, रविवार** तक एक बारी भोजन लें।
2. **चातुर्मास के हर महीने** या सिर्फ सावन के महीने में मंदिर के स्टाफ यानि 60 जनों के लिए एक दिन टिफिन या कॅश द्वारा रसोई की सेवा दें।
3. **23 जुलाई, सोमवार** - नियम की एकादशी, **3 सितंबर, सोमवार** - जन्माष्टमी **20 सितंबर, गुरुवार** - जलझीलनी एकादशी, **19 नवंबर, सोमवार** - कार्तिक शुक्ला एकादशी इन चारों दिन व्रत रखें।
4. चातुर्मास दौरान यथाशक्ति 'महापूजा' करवाएं।
5. रोज़ सुबह या सायं **'स्वामिनारायण महामंत्र'** का अजपाजप करते हुए **बीस मिनिट वॉकिंग** और **पंद्रह मिनिट** कपालभाँति, अनुलोम-विलोम, भस्त्रिका **प्राणायाम** करें।
6. सावन महीने के दौरान–
   (अ) 'बॅप्स' द्वारा प्रकाशित **'भगवान श्री स्वामिनारायण एक दिव्यजीवन गाथा'** के तीन पन्नों का नित्य पठन करते हुए पारायण करें।
   (ब) 'गुजराती' भाषा जानते हों, वे **'स्वामी की बातें'** या हिन्दीभाषी मुक्त **'उपदेशामृत'** की पारायण करें।
   (क) **'भगवत् कृपा'** के पिछले अंकों में आई संतों - मुक्तों की ज्ञानवार्ता का क्रमशः नियमित रूप से रोज़ पाठ करते हुए उस पर मनन-चिंतन करें।

❋ विशेष नियम ❋

चातुर्मास दौरान घर के (कुटुंब के) सभी सदस्य सुबह या दोपहर या सायं – जिस समय भी सभी को अनुकूल हो, तब रोज़ इकट्ठे बैठ कर भोजन करें और... भोजन शुरू करने से पहले सभी दो मिनिट 'प्रगट प्रभु' की स्मृति के साथ 'स्वामिनारायण' मंत्र की धुन करें।

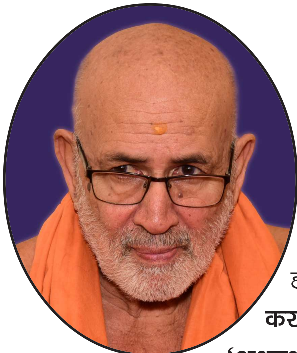

अलविदा

भगवत् कृपा छपने ही जा रही थी कि दिनाँक 20 जुलाई की रात्रि करीब 10:45 बजे हरिधाम से दिल्ली मंदिर में खबर आई कि गुरुवर्य योगीजी महाराज द्वारा दीक्षित **पू. माधवचरणस्वामिजी** अक्षरनिवासी हो गए हैं। हाल ही में प.पू. गुरुजी जब हरिधाम गए थे, तब उनसे मिल कर आए थे क्योंकि वे काफ़ी बीमार थे।

सहज ही प.पू. गुरुजी को पू. माधवस्वामिजी की सेवा, समर्पण एवं भक्ति की स्मृति हो गई। **गुरुवर्य योगीजी महाराज का अंतेवासी व अत्यन्त भरोसेमंद सेवक बन कर**, उनके स्वधामगमन तक अत्यधिक सेवा करके **उन्हें राज़ी किया था** और दादर मंदिर **'अक्षरभुवन' में उन्होंने प.पू. गुरुजी की बीमारी के दौरान भी खूब सेवा की थी।**

प.पू. निर्मलस्वामिजी के नेतृत्व में पू. ज्ञानस्वरूपस्वामी के साथ संस्था से निकलना पड़ा, तब **गुरुहरि काकाजी महाराज** के आदेश से **प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी** को गुरुवर्य योगीजी महाराज का स्वरूप मानते हुए **'समढियाळा मंदिर'** में रह कर सत्संग कार्य में ओतप्रोत हो गए। करीब पैंतीस वर्ष समढियाळा में रह कर सेवा करते रहे। अब जब उनकी तबियत काफ़ी खराब हुई, तो प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की आज्ञानुसार उन्हें हरिधाम में लाया गया और मुक्तों को अपनी सेवा का लाभ देकर अंतिम विदाई ली... गुरुवर्य योगीजी महाराज के अंतर की प्रसन्नता प्राप्त किए हुए ऐसे विरल पात्र को अंतर से नमन!

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 23.7.2018, सोमवार — देवशयनी एकादशी, व्रत – चातुर्मास प्रारंभ

(2) दि. 27.7.2018, शुक्रवार — गुरुपूर्णिमा

सुबह 8: 30 से 10:00 ताड़देव मंदिर में मनाएंगे।

अबकी बार चंद्र ग्रहण होने के कारण दोपहर 2:30 तक ही 'गुरुपूजन' कर सकेंगे।

(3) दि. 28.7.2018, शनिवार — श्रावण मास – प्रारंभ

(4) दि. 29.7.2018, रविवार — हिंडोला (झूला) प्रारंभ

(5) दि. 8.8.2018, बुधवार — एकादशी – व्रत

(6) दि. 15.8.2018, बुधवार — **भारत स्वातंत्र्य दिन**

(7) दि. 21.8.2018, मंगलवार — पवित्रा एकादशी – व्रत *(ठाकुरजी को रेशम के हार पहनाने।)*

(8) दि. 26.8.2018, रविवार — श्रावणी पूर्णिमा – रक्षाबंधन (राखी)

(सुबह 9: 00 से 10:30 प.पू. गुरुजी से शाश्वत् रक्षाकवच प्राप्त करने के लिए महापूजा-प्रार्थना करेंगे।)

(9) दि. 31.8.2018, शुक्रवार — नागपंचमी

(10) दि. 1.9.2018, शनिवार — गुरुहरि पप्पाजी महाराज का प्राकट्य दिन

रांधण छठ (षष्ठी)

(11) दि. 2.9.2018, रविवार — शीतला सातम (सप्तमी)

(12) दि. 3.9.2018, सोमवार — **जन्माष्टमी** – व्रत

(13) दि. 6.9.2018, गुरुवार — एकादशी – व्रत, हिंडोला (झूला) समाप्त

(14) दि. 9.9.2018, रविवार — श्रावण मास – समाप्त

(15) दि. 13.9.2018, गुरुवार — गणेश चतुर्थी

(16) दि. 20.9.2018, गुरुवार — जलझीलनी एकादशी – व्रत

R.N.I. 28971/ 77 *(Air Mail)*

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052